ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषिऔर प्रौद्योगिकीविश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक :

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान – जारी करने का दिन :2023-09-05 (अगले5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2023-09-05	2023-09-06	2023-09-07	2023-09-08	2023-09-09
वर्षा (मीमी)	35.0	25.0	10.0	20.0	30.0
अधिकतम तापमान(से.)	34.0	32.0	32.0	33.0	33.0
न्यूनतम तापमान(से.)	20.0	19.0	19.0	20.0	20.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	80	70	75	85	85
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	45	50	55	60	60
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6	8	7	5	6
पवन दिशा (डिग्री)	70	50	30	70	90
क्लाउड कवर (ओक्टा)	3	5	7	6	6

सम सारांश / चेतावनी:

आने वाले पांच दिनों में 10 सितंबर तक 10-35 मिमी तक हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 32.0 से 34.0 डिग्री सेल्सियस और 19.0-20.0 डिग्री सेल्सियस के बीच हो सकता है। पूर्व-उत्तर-पूर्व दिशा से 5-8 किमी/घंटा की रफ्तार से हवा चलेगी। नैनीताल जिले में कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश/आंधी चलने की संभावना है। चेतावनी: 5-9 सितंबर तक आंधी/बिजली और तीव्र बौछार के संबंध में पीला अलर्ट जारी किया गया है। क्षेत्र में शुष्क मौसम बने रहने का अनुमान है।

सामान्य सलाहकार:

विस्तारित सीमा पूर्वानुमान के अनुसार जिले के लिए साप्ताहिक औसत वर्षा 31.9 मिमी थी जिसे काफी हद तक कम बताया गया है और आगामी सप्ताह के लिए कम वर्षा की भविष्यवाणी की गई है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पिछले सप्ताह के मौसम, मौसम पूर्वानुमान आदि की जानकारी के लिए "मेघदूत ऐप" डाउनलोड करें बिजली संबंधी जानकारी पाने के लिए कृषि मौसम संबंधी सलाह और "दामिनी ऐप"। मेघदूत और दामिनी ऐप्स कर सकते हैं गूगल प्ले स्टोर (एंड्रा इड उपयोगकर्ता) और ऐप सेंटर (आईओएस उपयोगकर्ता) से डाउनलोड किया जा सकता है। इससे उन्हें कृषि गतिविधियों के संबंध में सही निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

लघु संदेश सलाहकार:

आगामी सप्ताह में हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है, इसलिए सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	अवस्था	फ़सल विशिष्ट सलाह
चावल	कल्ले फूटना	ऊंची पहाड़ियों पर रोपी गई धान की फसल में अब बालियां निकलने का समय है तो नमी बनाए रखे। मध्यम पहाड़ियों में चावल की फसल में रोग/कीट और जीवाणु पर निगरानी रखें। धान में कहीं-हींकहीं पर बैक्टीरिया जनित झुलसा रोग का प्रकोप देखा जा रहा है। जिन खेतों में पंक्तियों के अगले भाग सूखकर सफेद हो गये हों या पंक्तियो के दोनों किनारे ऊपर से नीचे की ओर सूखते हुये सफेद हो रहे हों वहाँ खेतों में काॅपर ओक्सीक्लोराइड 500ग्राम तथा स्टेपटोसाइक्लिन 15 ग्राम, 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिकाव करें। छिड़काव करने के पूर्व खेत से पानी निकाल दें तथा यूरिया का प्रयोग न करें। छिड़काव 7-10 दिन के अंतराल पर करना चाहिए। धान की फसल में रोपाई के 45-50 दिन बाद, तना बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रा निलिप्रोले 20 एस सी 150 मिली/है0 या फ्लूबेंडियामाइड 480 एससी 75 मिली/है0 या फिप्रोनील 5 एससी 1.0 लीटर या काॅरटाप हाइड्रो क्लोराइड 50 डब्लू पी 600ग्राम या क्लोरपाइरीफाॅस 20 ईसी 2.5 लीटर 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छित्रकाव करें। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
रागी	कल्ले फूटना	बाजरा की देर से पकने वाली किस्मों में फसल की निगरानी करते रहें क्योंकि तना छेदक कीट फसल को नुकसान पहुंचाता है। इसकी रोकथाम के लिए फिप्रोनिल 5 एस. सी. 1 लीटर या कॉरटाप हाइड्रो क्लोराइड 50 डब्लू. पी. 600 ग्राम या क्लोरपाइरीफॉस 20 ई. सी. 2. 5 लीटर 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
मक्का	वनस्पतिक विकास	जैसे ही भुट्टों में बीज भरने लगें, आवश्यकता तथा पूर्वानुमान के अनुसार सिंचाई करनी चाहिए। कीट का प्रकोप होने पर उचित कृषि उपाय करना चाहिए। झुलसा रोग के लक्षण दिखने (लम्बे तथा अण्डाकार नाव के आकार के पीले से भूरे राण के धब्बे) पर मैंकोजेब या जिनेब 75 डब्लू पी की 1. 5 -2. 0 कि. ग्रा. मात्रा को 750 -800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से डालें। दूसरा छिड़काव प्रथम के 10 -15 दिन बाद करना चाहिए।सभी कृषि गतिविधियाँ साफ़ मौसम की स्थिति में की जानी चाहिए । सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
मूँग	वनस्पतिक विकास/ परिपक्वता	वानस्पतिक अवस्था में फसल की नियमित निगरानी की जानी चाहिए। अंतिम माह में बोई गई फसल में निराई-गुड़ाई करनी चाहिए तथा फसल की आवश्यकता तथा पूर्वानुमान के अनुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सफेद मक्खी द्वारा प्रसारित पीले मोज़ेक वायरस की उपस्थिति पर, पाइरीप्रोक्सीफेन 10 ई.सी. 0.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर डालें। किसानों को पीला मोज़ेक वायरस के प्रति प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना चाहिए।सभी कृषि

		गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए। परिपक्व फसल की कटाई की जानी चाहिए और खरीद/खपत के लिए भंडारण किया जाना चाहिए।
काला चना	वनस्पतिक विकास/ परिपक्वता	वानस्पतिक अवस्था में फसल की नियमित निगरानी की जानी चाहिए। अंतिम माह में बोई गई फसल में निराई-गुड़ाई करनी चाहिए तथा फसल की आवश्यकता तथा पूर्वानुमान के अनुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सफेद मक्खी द्वारा प्रसारित पीले मोज़ेक वायरस की उपस्थिति पर, पाइरीप्रोक्सीफेन 10 ई.सी. 0.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर डालें। किसानों को पीला मोज़ेक वायरस के प्रति प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना चाहिए। परिपक्व फसल की कटाई की जानी चाहिए और खरीद/खपत के लिए भंडारण किया जाना चाहिए। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
सोयाबीन	फूल/फली बनना	फसल की नियमित निगरानी करें और तना छेदक मक्खी की उपस्थिति में क्लोरान्ट्रानीलीप्रोले 18.5 एससी 150 मि.ली. के दर से 700-800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें । यह प्रयोग गर्डल बीटल के लिए भी प्रभावी है।सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
अरहर (लाल चना/अरहर)	फूल/फली बनना	फलियां आने पर खेत सूखा ना रहे इसके लिए हल्की सिंचाई पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए करें। फली बेधक कीट के दिखने पर 5 -6 फेरोमोन प्रपंच/हेक्टर की दर से फसल में फूल आते समय खेत में लगाए। यदि 5 -6 मॉथ प्रति प्रपंच दो-तीन दिन लगातार दिखाई दे तो निम्नलिखित में से एक दवा का प्रयोग करे एन. पी. वी 500 सुंडी तुल्यांक अथवा बी. टी. 1 कि. ग्रा./ हैक्टर की दर से छिड़काव करें। निबोली 5 % + 1 % साबुन का घोल तथा इन्डोक्साकार्ब 14. 5 ई. सी. की 353 -400 मि. ली. या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस. जी. की 220 मि. ग्रा. या स्पाइनोसेड 45 एस. सी. की 125-162 मि. ली. मात्रा प्रति हैक्टर। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	अवस्था	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	रोपाई	फूलगोभी की पछेती किस्मों, पत्तागोभी की किस्मों और नोल-खोल की रोपाई इस महीने में की जा सकती है और यह तब किया जाना चाहिए जब अंकुर 4-6 सप्ताह के हो जाएं या वे 4-6 पत्ती अवस्था प्राप्त कर लें। रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
मूली	बुवाई	इस महीने में मूली की यूरोपीय किस्में जैसे पूसा हिमानी, पूसा मधुशाला, स्कारलेट ग्लोब, स्कारलेट लॉन्ग, गाजर की एशियाई और यूरोपीय किस्में जैसे पूसा केसर, पूसा मेघाली, अर्का सूरज, पूसा वृष्टि, पूसा रुधिरा, शलजम की किस्में जैसे पूसा कंचन, पूसा श्वेता, पंजाब सफ़ेद, स्नोबॉल, गोल्डन बॉल, पूसा स्वर्णिमा, पूसा चंद्रिमा और चुकंदर की किस्में जैसे क्रिमसन ग्लोब, अर्ली वंडर, डेट्रॉइट गहरा लाल बोई जा सकती हैं। शुष्क

		मौसम की स्थिति में बुआई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। शुष्क मौसम की स्थिति में बुआई के तुरंत बाद आवश्यकता तथा पूर्वानुमान अनुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
सेम/बाकला	बुवाई	इस माह में बुआई की जा सकती है। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
मिर्च	परिपक्वता/तुड़ाई	मिर्च की फसल का ऊपरी तना सूखने पर तथा काला पड़ जाने पर फसल को बचाने के लिए संक्रमित शाखाएं तोड़ कर हटा देना चाहिए। फसल को सड़ने से बचने के लिए 0.1% कैर्बेन्डाजिम घोल का छिड़काव करें। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।
आलू	बुवाई	आलू की बुआई मध्य सितंबर सिंचित घाटियों में आलू बोने का अच्छा समय है। सभी कृषि गतिविधियां पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
गाय	मादा बछियो का माँ से दूध छः महीने के बाद ही छुड़वाना चाहिए, ताकि उनका शारीरिक विकास अच्छे तरीके से हो सके।
भैंस	फूटरॉट ' रोग को रोकने के लिए, खुरों को कम से कम 3 दिनों तक सुबह और शाम के समय 2-3 मिनट के लिए 10% फॉर्मेलिन घोल या 5% नीले थोथे में डुबोया जाना चाहिए।
बकरी	ग्रामीण छेत्र में भेड़ एवं बकरियों को टिटेनस टॉक्साईड के 2 टिक्के एक माह पर, दूसरा 5 माह पर अवश्य लगवायें, जिससे नवजात मेमनों को टिटनेस नमक बीमारी न हो।